संस्कृत

पुराण

3887

पु.नं.33

७०। पृ. 22

गरुड पुराण (धार्मिक)

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

गरुड पुराण भाषा टीका सहित

मतवअ़ ईजाद किशन आगरा में मुन्शी किशन लाल के एहतमाम से छपा सम्बत १९३० सन १८७४

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ गरुड पुराण सटीक लिख्यते ॥ टीका ॥ श्रीभगवान सोई संसार विष वृक्ष सरूपी सदा विराजैं कैसे
ता वृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद है पुराण शाखा है ॥ ऋतु फूल मोक्ष फल है ऐसो वृक्ष सरूपी भगवान हैं तिन के चरणार विं
द की सदा जय हो ॥ १ ॥ हे वैकुंठ नाथ तुम्हारे प्रसाद कहे तै कृपा ते तीनो लोक देखे हैं उत्तम स्थान भूलोक १ भवलोक २
स्वर्ग लोक ३ मह लोक ४ जन लोक ५ तपलोक ६ सत्य लोक ७ अधम नीचे के लोक अतल १ वितल २ सुतल ३ तला

श्री गरुड उवाच ॥ धर्म दृढ बद्ध मूलो वेद स्कंध पुराण शाखा ढ्या क्रतु कुसुमो मोक्ष फलो मधु
सूदन पादपो जयति ॥ १ ॥ तार्क्ष्य उवाच भगवन् प्रसादात्ते वैकुंठ त्रैलोक्यं सचरा चरं मया विलोकि
तं सर्वं मुत्तम मध्यम मध्य मं ॥ २ ॥ भूर्लोकात सप्त पर्यंतं पुरं याम्यं विना प्रभो भूर्लोका त्सर्व लोका
नां प्रचुर सर्व जंतुषु ॥ ३ ॥ मनुष्य सर्व भूतानां भुक्ति मुक्ती फलं शुभं अतिशुक्रति नां लोके न भूतं
न भविष्यति ४

तल ४ रसातल ५ महातल ६ पाताल ७ मध्यम मनुष्य लोक ते सर्व देखे हैं २ पृथ्वी ते ऊपर सत्य लोक ताई हे प्रभु मैं सर्व लोक दे
खे पर एक यमपुरी विना सो मनुष्य लोक के प्रचुरः कह भांति यम लोक कू जात है ३ मनुष्य देह सर्व योनि में श्रेष्ठ है भुक्ति मुक्ति की
दाता है पुण्या त्मा जीव है जिन्ने मनुष्य देह पाई है सो मनुष्य समान न भूत ना प्राणी कोई हुआ न कोई होन हार है ॥ ४ ॥ २

गायंति देवता मनुष्य जन्म की महमा गावते हैं अनेक जन्म के पुन्य प्रभाव करि के मनुष्य देह पाई है ते धन्य हैं सो फल स्वर्ग लोक को दाता है और मोक्ष को देन हारो है ऐसो मनुष्य देह है ५ सो गरुडजी पूछते हैं कि महाराज मनुष्य देह क्या पुन्य करि कै प्राप्ति होइ और प्राणी कहा भांति सूं छूटे है मृत्यु हुए पाछे वह जीव कहां जाता है ६ गरुड पूछें हैं महाराज देह छूटे पाछें छुवे नहीं सो कारण कौन है सो हे इंद्रियन के ईश कहिये धरणी कहाँ गया प्राणी पाप पुन्य कहां जाय भोगे है सो

गायंति देवा किल गीत कानी धान्यास्तु ते भारत भूमि खंडे॥ स्वर्गापवर्गस्य फलोर्जनाय भवंति भूयः
पुरुषः सुरत्वात् ५ मनुष्य संलभे त्कस्मा न्मृत्यु माप्नोति तत्कथं म्रियते कः सुरश्रेष्ठ देह माश्रित्य कुत्र चित् ६
कजातिता निं द्रि याणिः अस्तस्य स कथं भवेत् क्व धर्मो णि कृता नि ह कथं भुक्तः प्रस र्ये ति ७ प्रसादं
कुरु मे सम्य क् वक्तुमर्हस्य शेषतः प्रेत मुक्तिं प्रदं मार्गं कथं यस्य प्रसादतः ८ श्री भगवानुवाच॥ कथ
यामि पदं वत्स क्रियां चैवोर्द्ध देह कीं स्वहस्तेन क्रिया कार्य्या प्रेत मोक्ष मभि प्सुभि ९ स्त्रीना पि वि शेष
ण पंच वर्षाधिको शि शो वृषो त्सर्गादि कं कार्यं प्रेतत्वं विनि वर्तते ॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥

कहो ७ हे महाराज मोपे कृपा कर कै पूर्व वार्त्ता सुनावो प्रेत की मुक्ति कौन भांति होय सो कहो ८ श्री भगवान कहते हैं हे गरुड ऊर्द्ध देह की क्रिया कहूं सो सुन प्रेत को मोक्ष चाहे सो अपने हाथ क्रिया करे ९ स्त्रियन की विशेष करि कै क्रिया करे पांच वर्ष से उपरांत बालक होय ता कूं वृषोत्सर्गादि करणं प्रेत पणातें छूटि जाय और सर्व पापन को नाश होजाय वृषत यज्ञ सों १

भगवान कहत हैं हे गरुड पांच वर्ष उपरांत वृषोत्सर्ग करैतें प्रेत देह नही पावै पर्म गति की प्राप्ति होइ २१ वृषोत्सर्ग उपरांत
कोऊ आंने सी करै नहीं और करै तौ प्रेत जन्म पावै और मृत्यु भए पाछे संतान क्रिया कर्म करैसो मोक्ष पद पावै दान व्रत पद
किये होइ तिन को फल पावै यह वृषोत्सर्ग किये बिना मोक्ष नहीं पावै २२ हे भगवानजू वृषोत्सर्ग जीवतेही करै तौ कौन
समय करै और करै तौ कहा फल प्राप्ति होइ और षोडष श्राद्ध किये को कौन महात्म्य है और क्या फल है सो सम्पूर्ण

स्त्रिनाम विशेषेन पंच वर्षादिके पिसो ॥ वृषोत्सर्गादिकं कार्यं प्रेतत्वा विभिजायतं २१ वृषो
त्सर्गो व्रत नान्यत क्वचिदस्ति मही तले ॥ जीवन्वापि मृतो वापी वृषोत्सर्गं करोतिय ॥ २२
गरुड उवाच ॥ कस्मिन्काले वृषोत्सर्गं जीवन्वापि मृतो पिवा ॥ कुर्वं किं फल माप्नोति प्रेत श्रा
द्धे श्च षोडशः २३ श्री भगवानउवाच ॥ कृत्वा तुष्टसे त्सर्ग कुरुते पिंड पातनं ॥ नोप तिष्ठतित
च्छ्रेयो दातु प्रेत स्य निर्फलम् ॥ २४ ॥ एकादशाहे प्रेतस्य यस्या नो त्सृज्यते वृष ॥ प्रेतत्वं सुस्थि
रं तस्य दाने श्राद्ध सतै रपि २५ जीवं वापि मृत स्यापी वृषोत्सर्गं करोति पपितृ लोकं गत स्तेन पि

मेरे अर्थ वर्णन करिबे को जोग्य है २३ भगवानउवाच ॥ वृषोत्सर्ग किये विना पिंडदान न करै ताको प्रेत नहीं पावै प्रेत के नि
मित्त करै ताके सर्व पिंड निष्फल हैं यामें संशय नहीं २४ देह छुटे पीछे ग्यारहवें दिन वृषोत्सर्ग नही करै तौ वह प्राणी स्थि
र प्रेत रहै पाछे सत २०० श्राद्ध करै तदपि मुक्ति नहीं पावै ॥ २५ ॥ जीवते वृषोत्सर्ग करै तथा मृत्यु समें करै तो पितृ लोकमें सु
खसों रहै २६

ग॰पु॰ टी॰ ५

हृषोत्सर्ग करै ओर अपनी जाति कुल धर्म लीये रहै ताको मृत्यु भये पै परम पद वैकुंठ धाम को प्राप्ति होइ १७ ॥ पुत्र पतनी अथवा शि

ष्य शिहिनो तथा नाती पंती करै अथवा स्त्री करै अथवा सुत कर्म करै तौ वैकुंठ वास पावै ॥ १८ ॥ गरुडउवाच ॥ जा पुर्ष के स्त्री नहीं होइ

अथवा स्त्री के भर्त्तार नहीं होय तथा संबंधी भ्राता कुटंबी न होइ ता स्त्री पुरुष की गति कैसे करि कैं होइ सो कहो १९ भगवानोवाच ॥

अपने हाथ से जो दान दिये होइ ताकी देह छूटे पर सब दान ता सैं आय कै प्राप्ति होत है ओर जो पाप किये है सो आय कै प्राप्ति होत

हृषोत्सर्गादिकं कृत्वा जाति धर्म समाचरात ॥ कृत्वा वै मृत्यु माप्नोति सगछे ब्रह्म सारवजं १७ पुत्रो वा यः

पिता चैव पौत्रे वा बांधवस्तथा ॥ यो प्रानं स्वार्थ भागी च मृते कुर्यात् हृषोत्सव १८ गरुडउवाच ॥ न पत्नी

न च भर्त्ता च नैव संबंधिनं तथा ॥ तेन मुक्ति सवाप्यं तेन दानार्थ्यं तथा परे १९ श्री भगवानोवाच ॥ यानि या

नि च दानानि स्वयं दत्तानि मानवै ॥ तानि तानि च सर्वाणि उपतिष्ठंति चाग्रतं २० व्यंजनानि विचित्राणि

भक्ष भोज्या यानि च स्वयं हस्तेन दानानि देहं ते चा सयं फलं २१ यात्स्वस्थं सरीर स्वं तावत् धर्म समा

चरेत ॥ अस्वस्थ प्रेतिताप्यन्येन किंचित कर्तु मुन्सहेत् २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥

न है २० नाना प्रकार के भोजन करवाये होइ ब्राह्मण कौ अपने कर सैं तौ ताके सरीर छूटे पर अनंत गुण फल प्राप्ति होत है २१

६ जौ लौं सरीर थिर ता रहै तौ धर्म मैं मन कौ राखै तथा फिर पाछे कोई कर्म कांड बनै वा न बनै तातै शरीर छूटे पहले जतन करनो

ग्र॰ रा॰रा॰ कयो है २२ ५

श्री

हे गरुड भगवान कहते हैं जोजो दान करै सो अपने हाथ करै जीवतो करै अथवा मेरे पीछे करै सो दान अक्षय है आगे
प्राणी को यह दान निश्चय करके प्राप्ति होय २३ हे गरुड विविधि भांति के भोजन तथा साग अपने हाथ ब्राह्मण को जि
मावै तो उसे अक्षय पुन्य होय २४ हे गरुड गाय धरती सोना कपड़ा भोजन पुन्य करै कटोरा थाली जोजो दान करै सो सर्व ज
हां जीव जाय तहां सर्व प्राप्ति होय २५ हे गरुड जित्तने ताईं अपनो शरीर स्वस्ति करै है सावधन हालते चालते जितने

यानि यानिच दानानि स्वयं दत्तानि मानवे तानि तानिच सर्वाणि रूप तिष्टंति चाग्रतः ॥२३॥ व्यंजना
नि विचित्राणि भक्ष्य भोज्यानि या निचं स्वयं हस्तेन दत्तानि देहांते चाक्षयं फलं ॥२४॥ गोभूहिरण्यवा
सांसि भोजनानि यदा निच यत्र यत्र वशे जंतु तत्र तत्सर्वं प्राप्नुयात ॥२५॥ यावत स्वस्थ शरीरस्त्वं तावत्तु ध
र्मं समाचरेत अस्वस्था प्रेषितो न्यैश्चिन किंचित्कर्म सहेत ॥२६॥ जीव तस्य मृतस्येह न भूतं
चोर्द्ध देहकम् ॥ वाय भूत क्षुधा विष्टो भ्रमतो है दिवा निशाम् ॥२७॥ दत्वा दानान्य नेकानि सु तीर्थे
म्रयते यति ब्रह्मचारी पतिर्भूत्वान गछति शुभां गति ॥२८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥२९

ताईं एक धर्म को उपाय करनो और परवस भये पीछे कोई बात होने की नहीं २६ टीका हे गरुड ता प्राणी की उर्द्ध
देह की क्रिया न हुई होय तो पवन रूप होके रात दिन भ्रमतो रहै क्षुधा तृषा वंत भ्रमतो डोलै सो ग्रंथ के बीच में
कहा है सो सुनो सावधान होकै २७ हे गरुड अनेक दान करै तीर्थ विषै मृत्यु होय ब्रह्मचारी हो जती सती हो तोभी हर्षो कना

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

टीका। हे गरुडजी प्राणी की क्रिया कर्म न भयो होय तौ कर्म्मिकः क्रिया होय कीट पतंग योन के विषै जन्म धारै फेरि मरि जाय फेरि जन्मे ॥२९॥ हे गरुण अपने शरीर में सामर्थ्य होय जीतने ताईं वृद्ध अवस्था नहीं चें द्रियन में शक्ति होय जितने ताईं अपने जीव को उद्धार करनो जोग्य है कैसे करि कै अपने ग्रह मांही अग्नी लगी होय सो फेरि कहै अब कूप षोड के जल ल्यावो अग्नि बुझावो वैसे वृद्ध मनुष्य की सामर्थ नही शरीर हालनें चालनें दान पुन्य कियो नही ते मनुष्य बहुत करिकें भूले है ऐसो जन्म फेरि पावे नही ३०॥

कृमिः कीट पतंगो वा जायते म्रियते हि स अस्त्र कुम्भे वस सोपि जात सद्यो वनस्पति २९ यावत्स्वस्थमिदं सरीरजं यावन्न जरा दूरितो यावच्चेंद्रिय शक्तिभि प्रति हता यावत्क्षयो नायुषः आत्म श्रेय सितन्देव विदुषा कार्य्ये प्रयत्न महान् संदीप्ते भवने कूप खननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ३० इति श्रीगरुडपुराणे प्रेत कल्पे उर्द्ध देहिको नाम प्रथमो ध्यायः १ श्री गरुड उवाच श्लो० स्व हस्ते किं फलं दैवं पर हस्ते च तद्वद स्वस्था वस्थे रसं च्चेत्वा विधि हीन यथा पिवा १ श्री भगवानुवाच एका गो स्वस्थ चितस्य स्वस्यस्य गोशतं

इति श्री गरुड पुराणे टीकायां प्रथमः १ टीका- श्री गरुडजी प्रश्न पूछत हैं हे भगवान अपने हाथ अथवा और के हाथ जो क्रिया कार्य करै तौ ता को कहा फल होय सो कहो और चेत में अथवा अचेत में और विधि सो और विधी हीन ताकी महिमा कहो १ हे गरुड तू सुन सावधान होकें हाल चालत एक गोदान करे और पर वस सौ गऊ दान करे ॥ ७

joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

तो विप्र यम एक गऊ की तुल्य नहीं २ हे गरुड मृत्यु हुये पाछे लक्ष गो विधि संयुक्त दान करै तीर्थ विषै नया भले सु पात्र
कू दई तो अक्षय फल प्राप्ति होय वा प्राणी कूं ३ हे गरुड भले सु पात्र ब्राह्मण को देख कें नित्य को नित्य पूजन करै दान दे औ
रो ऐसो पुरुष कल्यान करै अपनो ४ हे गरुड कुपात्र कू अपनो भलो चाहे तो गरुड गऊ को दान न करै दाता नरक में जावै ५

सहस्रं मृय मानस्य दत्त चित विवर्ज्जिते २ मृतस्यैव पुनर्लक्षं विधि पूर्वंच तत्समं तीर्थ यात्रा समा
योगादेकावै लक्ष पुन्यदा १ पात्रं दृष्ट्वा खग श्रेष्ठ अहन्य हनि पूजयेत् दातु दान मपा योयं ज्ञानि नामा
प्रति ग्रहः ४ मंत्र हीन विषं दत्तं भुक्तो जीव तितत्समं पात्रं दत्तेन दात्स्वर्गे कुपात्रे नरकं प्रति ५ एक एक
स्य दातव्या नवहूना कदाचनः प्रा वि क्रिया वि भ क्ता नो हन्यते सप्त मं कुलं ६ अतः संपूर्ण तां याति
वृषोत्सर्गकृते श्रती तस्मात्सर्व प्रकर्तव्यं प्रेलत्वा भा को मिच्छति ७ मोक्ष काम खग श्रेष्ठ वृष यज्ञं स
मा चरेत् अकृत्वा मृयते यस्तु पुचान्न च भुक्ति भाक् ८

एक गऊ को दान एक ब्राह्मण कू देय घनेन को देय तो विभक्त करै कैसे बेचि के बट करै वह दाता नरक में जाता है आर अ
पने कुल सहित करिकें ॥६॥ भगवान कहते हैं कि हे गरुड वृषोत्सर्ग की ये ते समस्त दोष दूरि होंय ताही कारण
हे गरुड परलोक को साधन निश्चै कर कै कीजे ॥७॥ हे गरुड मोक्ष वांछा करै तो वृषोत्सर्ग करै विना वृषो॰ नरक गामी॰ ८

वृषोत्सर्ग कीयेते मार्ग मे सुख सूं जाता है ९ अग्निहोत्र करे यज्ञ करे दान करे तो हे गरुड एक वृषोत्सर्ग किये बिना सर्व नि
रफल है वृषोत्सर्ग के समान और नहो १० गरुडजी प्रश्न करें हैं कि हे महाराज कृपा करि के कहो ऊर्द्ध देह की क्रिया कोन
से मास कोन सी तिथि कौन विधि सू करे सो विधि कहो ११ वृषोत्सर्ग कियेसे कैसो फल है सो समस्त कहो १२ कार्त्तिक सूं

अपुत्रो पि हयत कुर्यात् सुखं यांति स चाधुनि ९ अग्निहोत्रादिभिर्यज्ञैर्दानैश्च विविधैरपि नतागति
भवा प्नोति वृषोत्सर्गो कृते तुया १० श्रीगरुड उवाच कथयस्व प्रसादेन क्रियाचैवोर्द्ध देहकिं कस्मि
न्मासे तिथौ कस्यां विधिना केन नद्रवत् ११ कृत्वा किं फल माप्नोति तन्मे कथय सर्वतः १२ श्रीभगवा
नउवाच कार्त्तिकादि शुभे मासे उत्तरायण गोरवो शुक्ल पक्षे अथवा कृष्णे तिथिस्तु द्वादशी शुभा
१३ शुभ लग्ने मुहूर्ते वा शुचौ देशे समाहितः ब्राह्मणं तु समाहूय विधिवत् शुभ लक्षणः १४ जपहो
मे स्थादाने प्रकुर्यात् देहसाधनम् पुन्ये हि शुभ नक्षत्रे ग्रहान् देवान् समर्च्चयेत ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५
आदिलेके शुभ मास लै जो उत्तरायण सूर्य्य होय शुक्ल पक्ष अथवा कृष्ण पक्ष तिथि द्वादशी में कर्णो निश्चै करि के १३
शुभ लग्न होय मुहूर्त्त शुभ पवित्र ब्राह्मण सावधान होय ब्राह्मण बोलि के विधि संपूर्ण करे प्राणी की निमत्त १४ जब हो
म दार जासूं देह सद्ध करे और शुभ दिन शुभ नक्षत्र ग्रहे देवन को पूजन करे ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

हे पक्षिन के राजा पूजा कीजे सि विधि शक्ति होय जैसो होम करै मंत्र करि के ग्रहों को अस्थापन करै भली विधि सूं पूजन करै
२६ मात्रुका कि पूजा करै दश दिग्पाल पूजे अग्नि अस्थापन करै पूर्ण होम करै २७ शाल ग्राम पूजन स्थापन करै वैस्वदेव श्रा
द्ध करै वृषभ को पूजन करै वस्त्रा लंकार आभूषण सहित करिकै २८ विधि सूं करि कै वछा बछिया सहित तर्पण करि के
मदक्षिणा होम करि के विसर्जन करै २९ हे गरुड वेद मंत्र सूं कर के होम करै अनंतर उत्तर दिशा कू मुख करै वृषभ के दक्षि

होम कुर्याद्यथा शक्ति मंत्रैश्च विविधैर्द्विज ग्रहाणां स्थापनं कुर्यात पूजनं तु गदाधिपः २६ मात्रुणां
पूजनं कुर्यात दशाहारांश्च पान येत वन्हि संस्थापनं चैव पूर्ण होमं तु कारयेत २७ शाल ग्रामं तु संस्था
प्य वैस्वदेवं श्राद्धमाचरेत वृष सं पूज्य तत्रैव वस्त्रालंकार भूषनैः २८ वत्स्नो वत्सन यैश्च पूर्वं सम्य
क् भोजयेत मदक्षिणा नि कुर्वीत होमांते च विसर्जनं २९ यमं मंत्र समुच्चार्य होमांते च उदङ्मुखं धर्म्मे
स्त्वं वृषरूपेण ब्रह्मणा निर्मिता पुरा २० नावोत्सर्ग प्रभावेण मा समुद्धर भवार्णवात अनेनैव वृषोत्सर्गे

एकादशाह मे मंत्र कहै हे वछा तू धर्म राज को सरूप है आगे तोकूं ब्रह्मा जीने रच्यो है संसार में तुम्हारे बिबाह के
प्रताप से हमारे पित्र स्वर्ग को उद्धार करो भवार्ण वात कहने संसार सागर ते तारो २० तुम्हारे उत्सर्ग प्रभाव सो संसा
स्वरूपी समुद्रतें उद्धार करो वृषोत्सर्ग कूं कुंभ के जल सूं अभिषेक करि अंकित देने ॥२१॥ + ॥ + ॥ +

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

वृक्ष के मूल ऊपर जल मस्तकस्थ धारण करै भले मंत्र अभिषेक कर भली विधि सूं करि के २२ ता मंत्र सूं वृषोत्सर्ग करिके
आत्म श्राद्ध करै अनेक प्रकार दान करै २३ मृतक के अस्थान पै जाय कैं जल अंजुली देय आप की शक्ति होय जितनीक
कूरश्चोषनी मावें अथवा सूको अन्न पुन्य करै २४ जो दान के प्रताप त्रप्ति होय कें कठिन मार्ग विषे सुख से जाता है जिन

वृक्ष मूले समास्थाप्य तंदुकं सिरश्चान्य सेत अभिषिच्य सर्वै मैंत्रै पावनै विधि पूर्वकं २२ तेन कीडे
ति मंत्रेण वृषोत्सर्ग कृते प्राति आत्म श्राद्ध ततः कृत्वा दत्वा दानान्य नेकशः २३ मृत कै यत्र गंतव्यं
जलं तत्र प्रदापयेत् यदिष्ट जीवितं स्वामी तत्र पदत्त शक्तितः २४ सुत्रप्ति सुखं मार्गं मृता यांति
सुषे नहि यावन्न दीयते श्राद्धं वर्षानां चैव विंशति २५ एकोदिष्ट विधानेन स्वधाकारेण धीमता
कार्य मेकादशाहं तु द्वादशाहा प्रयत्नतः २६ सापिंडी कारणा दद्यात् कुर्यां श्राद्धानि षोडशः॥
ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु पद दानाय दापयेत् २७

ने तोडी श्राद्ध वर्ष दिन को कियो होय जितने ताई अपनो दीयो होय तथा ओर को दीयो होय तो सर्व पावै है २५ एकोदिष्ट वि
धि सूं करै स्वाहाया वा णिकरि कें बुद्धि वंत ब्राह्मण कूं बुला कें एकादशा तथा १२ करावे निश्चै करि के २६ सापिंडी भये पाछे
सोल्है श्राद्ध करै ब्राह्मण कू भोजन करावे ओर अछे पदार्थ दान करै॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७

A joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

गः पु॰
१२

दीना नाथ कहते है कि गरीब ब्राह्मण कूं संतोषैं दक्षिणा देइ मन करि कें पूजें ने ब्राह्मण देवता सम तुल्य है ॥ २८ ॥ सर्वं सिद्धि प्राप्ति होय यथा वैसव होय या भांति सूं नित्य दान करे नामयन मे स्वर को लेके दया राखे जीवे जितने अपने जीव माहीं २९ जैसे दान करे सो अक्षय फल होय तीर्थ विषे पुन्य करे व्रत श्राद्ध संवत्सर आदि करे तो सर्व अक्षय फल होय

दीना नाथन्यनेकानि दद्यात्सन्नाच दक्षिणां एवं याः कुरुते वत्सः ब्रह्म पुत्रो दिमानवः २८ सर्वसिद्धि फला वांछि यथा वैसव चारिण नित्य नैमित्य कं कुर्यां याव जीवति मानवः २९ यत किंचित वृद्धने धर्म्मभक्षयं फल मा श्नुते तीर्थ यात्रा व्रतादीनां श्राद्ध संवत्सरा दिकं ३० देव पूजा दया कार्यं समना सत्य भीषणं ह्येये सूत्न्यं क्षमा ब्रह्म दर्शनं तत्न कास्यपः ३१ प्रथमे हनियः पिंड स्तेन मूर्द्धि प्रजायते ग्रीवा वापि द्वितीय स्यात्त्रतीये भवेत ३२ चतुर्थे तु भवेत्पृष्ठि पंचमे नाभि संभवः षष्ठ सप्तकटि गु

[illegible]

३० देव पूजा करे दया राखे साच बोले चुगली काहू की न करे जीवों की दया पाले समा ब्राह्मण कूं देखे हे कस्यप केपच ३१ प्रथम दिन के पिंड से मस्तग उपजे दूसरे दिन के पिंड से ग्रीवा बन्ती हे तीसरे दिन के पिंड से हृदय उपजे हे ३२ चौथे दिन के पिंड से पिष्ठ उपजे हे पांचवे दिन नाभि छठे सू सातयें सू कटि होय गुह्य इंद्रिय होय आठये जंघा ३३

१२

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

नवमे पिंड सू घाँदूं ओरु पान दश मेदिन संपूर्ण शरीर उपजै भूखलग कैसितानेवह मेतपेह जाने तन कूभस्य जाँऊ घर
के द्वार सन्मुख चाहत है ३५ दश मेदिन पिंड देह्यिपन कूदीजै तानू पिंड जै देह क्षुधारख की प्रसन्न हुवै ३५ त्रैलोक्य कीभू
ष लगे एकादशे द्वादशा के दोय दिन मेत भुंजै है ३६ अस्त्री अथवा पुरुष अन्न जल वस्त्र मेत को नाम ले के दान करे शर

श्लोक ॥ दशमे ह्नया: पिंडं दद्या द्वादशा मेनर: यत: देह समुत्पन्नो प्रीतोती वक्षुधान्वित: ३५ त्रैलो
क्यव्यादिनी यस्य क्षुधा तस्मिन्न पश्यति एकादशं द्वादशंच प्रेतो भुंक्ते दिन द्वयं ३६ योषित पुरुष
स्यापि प्रेत द्वादशमुच्चरेत् दीप मंत्रं जलं वस्त्रं यत्किंचि दीयते सदा ३७ त्रयोदशे न्हिसं प्रेतो नीयते
यम किंकरै पिंडजं देहमाश्रत्य दिवारात्रौ क्षुधान्वित: ३८ सीतोस दुरव वहुलं कव्या हादुखदा
यिन: क्षुधा त्रषादि कंयच्च सर्वं भवति गच्छत: ॥ ३९ अहन्या हानि वै प्रेतो जो जनानां शत द्वयं चत्वा
रिंसत्तथा सप्त अहोरात्रेच गच्छति ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥

शनोडी ३७ त्रयोदश के दिना यम के किंकर लेजातेहैं पिंड कर के देह उपजी है ताकू आश्र हर्ई कै रात दिन क्षुधा वान चलैहै ३८
सीन उस्न कहते सीत करि कै कंपै है ओर ताप जलत है यमके दूत मारत है क्षुधावान त्रषावान दुखी होय के जात है ३९ नित्य
प्रेत चलत है दोसो योजन २०० उपरांत योजन रात ४७ दिन में प्रेत चलै है ॥ ४० ॥ १४

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

यम के किंकर फांसि कंठ में डारि के चला मार्ग विषे विलाप करे है ऐसो पापिष्ठ मनुष्य है ते अपनो गृह छोड़ के यम के लोक को जाता है ॥४१॥ हे गरुड प्रेत पाप रूपी होइ के शुभ अशुभ पाप की न्याति के मार्ग में पुर हैं तिन के विषें म्नि के जात हैं ४२ हे गरुड इतने पुर मार्ग में आवें हैं कोण से याम्यपुर १ शौरि पुर २ नगेंद्र भवन ३ गंधर्वनागालयं ४

यम्यपाशैर्धृतः पोहा रहेति पिंड वान्यापि स्व गृहं तु परित्यज्य पुरं याम्यं प्रनियतो ४२ क्रमेण यानि सम्प्रेतो पुरं याम्यं शुभाशुभम् आंते भवनानि नान्येव मार्गे पुर चराणि च ४ याम्यं शौरिपुरं इंद्र रुद्र भवनं गंधर्वनागालयं क्रौरं क्रूरपदं विचित्र भवनं वह्वा पदं दुःखदं नानाक्रंद पुरं सुतप्त भवनं रौद्र पयोवर्षणं शीताढ्यं बहुभीति धर्म्मभवनं योग्यपुरं चाग्रतः ४३ त्रयोदशे न्हि संप्रेतो नीयते यम किंकरैः तस्मिन् मार्गे व्रजते यो ग्रहीत इव मर्कटः ४४ ॥

क्रौर पुर ५ क्रूर पद ६ विचित्र भवन ७ बहुवा पद ८ दुखद ९ नानाक्रंद १० सुतप्त भवन ११ रौद्रः १२ पयोवर्षणः १३ सीताढ्य १४ बहुभीति १५ धर्मभवन १६ योग्यपुर १७ इतने पुर मार्ग में आते हैं सो खर्च बिना बहुत दुखी है ४३ हे गरुड मृत्यु हुए पाछैं त्रयोदशा के दिन या प्राणी को यम राज के दूत जैसे वानरा को बाजीगर ले चले हैं तैसें वा प्राणी को त्रास देके ४ १४

ग॰पु॰ टी॰ १५

हे गरुड ता मार्ग विषे पुत्र पौत्र करै हैं हाहाकार शब्द करै हैं ऐसी दशावान वाणी बोलै है ता मार्ग में मेरा या ठौर कोई नहीं है वारवार पछिता ता है ४५ हे गरुड मोटे पुण्य के प्रताप करिकै मनुष्य देह पाई है ता पुरुषने माया जोरि कै दान पुन्य कियो नहीं ते प्राणी वारंवार पछितायंगे ४६ हे गरुड ऐसी वाणी बोलै है मेरो धन पराया होगया है ४७ हे गरुड मार्ग मैं प्रेत ऐसी वाणी कहै हैं कि मैंने दान कियो नहीं अग्नि होत्र कियो नहीं तपस्या करी नहीं देव पूजन कियो नहीं

तथैव स व्रजन्मार्गे पुत्र पौत्रा इति ब्रुवन् हाहेति क्रंदते नित्यं कीदृशं हा मया कृतं ४५ मानुषत्वं महाभाग लभते भूमि भारते तं प्राप्य न प्रदत्तं मे प्राप्या पं सुख दं ग्रहं ४६ पराधीनं कृतं तत्र द्रव्यं तस्य विवशा शने किंकरैः पीड्यते त्यर्थं स्मरन्वै पूर्व देहकं ४७ मया न दत्तं न हुतं न हुता शनं तपो न तप्तं त्रिदशान पूजितं न शिव ते स्वर्ग नदी महाजलं शरीर भोगान मया कृतानि ४८ जलाशयो नैव कृतो हि निर्जले मनुष्य हेतो पशु पक्षि हेत वे ॥

श्री गंगाजी स्नान कियो नहीं केवल अपने शरीर को पालन कियो ४८ हे गरुड प्राणी कहै है कि देखो मैंने निर्जल जमें जल को आश्रो कियो नहीं पशू हेरवग कहते पक्षिन अर्थे प्याऊ दीनी नहीं कूवा अथवा बावली बनवाई नहीं गौ चरन के वास्ते जगह छोडी नहीं गोब्राह्मण की सेवा करी नहीं ॥ १५

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

एक अपनो पालना कियो अब वार वार पछितानाहे ५८ नित्य दान कियो नहीं वेद दान कियो नही शास्त्र पूजन कियो नहीं।
कीड़े भप कौआसा भयो ताकी रक्षा करी नहीं एक अपने शरीर को पालन कियो ऐसे वार वार विलाप करिके प्राणी चलो
है रस्ता में ५९ इति श्री गरुड पुराणे प्रेत कल्पे मरणादि संस्कारो टीका यां द्वितीयं २॥ हे गरुड अकाश मार्ग विषै यम के।

गोतृषि हेतो नेकृतं हि गोचरे शरीर भोगा नि मया कृतानी ॥५८॥ नत्यत्य दानं न गवादि पूजनं न वेद
दानं न च शास्त्र पूजनं नरस्त्रिनं प्राणभया नराणां शरीर भोगा नि मया कृतानि ५९ इति श्री गरुडपुरा
णे प्रेत कल्पे मरणादि संस्कारो नाम द्वितीयो ध्यायः २ श्री गरुड उवाच ॥ एवं विलाप तस्तस्य प्रे
तस्यैव विपच्चरः क्रंदमानस्य कुर्वंति क्षुधितस्य वि किंकरा १ ततः शयन्ना दशेश्चे को वायु मार्गे प्रच
स्यते अष्टादश सहो रात्रै वल धामं पुरं व्रजेत २ तस्मिन्पुर वेरे रम्ये प्रेताणां च गणा महान पुष्पभद्रा न

हूत प्राणी कूं लियै जात हैं क्षुधा तृषामें दुःखी बहुत होरहो है प्राणी १॥ हे गरुड़ ता पाछें अंगार में दिन वलधाम पुर जात है
॥२॥ हे गरुड प्राणी पूछता है तापुर विषैं प्रेतनके गण बहुत आवे है एक वट को वृक्ष है सुंदर पुष्प भद्रा नदी है कहां
॥३॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

Joint project of Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

हेगरुड़ ता पुर विषें विश्राम करेहैं अस्त्री पुत्र केसुख आदि करे है व्हा जम के किंकर आईके घेरे हैं या प्राणी कूं ५ हेगरुड़ दया
कि वाणी प्राणी बोलत है रुदन करै है चकित होयके या प्रकार कहत हैं देखे हमारो धन पराये होगयो स्त्री पुत्र पराये हैग
ये अब मेरो कोईनही है अबमेरी सहाई कोकर्णहारो कोई नहीं मे बड़ा अभागी होगयो हुं ५ अपनो चाकर अपनो मित्र प्रधान स

पुरे तत्र स विश्रामं प्राप्य ते यम किंकरै जया पुत्रादिकं सुखं स्मरते तत्र दुःखितः ॥४॥ रुदितेंच करौ
वाक्यैः त्रषार्तः श्रम पीडितः स्व धनस्व कलत्राणि गृहे पुत्र सुखानिच ॥५॥ भृत्य मित्रास्तथा मान्या
सर्वं भवति चे नरा ॥ क्षुधा तोय पुरे यस्मिन् किंकरै प्राच्यते तदा ॥६॥ किंकरो उवाच ॥ क्व धनं क्व सुता
भार्या भृत्या मित्रास्समीदृशः क्व धर्मो पार्जितं भक्षं मूढो गच्छ चिरं पथि ॥ ७ ॥ न ज्ञानं यम मार्गं च
पर लोक हितायच ॥ पाळये कीदृशं पार्श्वे गंतव्यं तव निश्चितं ॥८॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥

ये तासमें काम कोई आवे नहीं क्षुधा त्रषा बुझावे कोई नहीं ऐसो विलाप करै है फेरि यम के दूत बोलत हैं ६॥ दूत कहत हैं अब
तेरो धन कहां है पुत्र स्त्री मित्र चाचकर कहां है तेरो धर्म कहां गयो अरे मूढ़ अरे शठ अब चल तु ॥ ७॥ अरे मूढ़ तै यम
को भाग जानो नहीं परलोक कहेतं दुसरे लोक जानो है सो विना खर्च कैसे पहुंचूंगो और मारग विषमहै अपनो कोईनहीहै क्षो ८ १७

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

अरे मूढ यम गीता तें सुनी नहीं अरे मूढ अरे मूरख ऐसो वचन यम के दूत कहत हैं और मुद्गरन की मार देत हैं ९ ताके पाछे स्नेह करिके मोह करिके दया करिके मासिक को श्राद्ध करे सो ता प्राणी को पाथेकाणी आपके प्राप्ति होहै ताके पाछे और पुरकूं जात है १० तहां के राजा को नाम जंगम कहिये सो कैसो है साक्षात् काल को रूप है ताकू पापिष्टी देषि के डरे है फेरि विश्राम करे है तापुरवि

यम गीताभवं वाक्यं नैव स्नेहाच्छ्रुतं त्वया एव मुक्तः स्ततः सर्वे हान्यमान समुद्गरे ९ अन्नं दत्तं सुतै मेह्नि स्नेहाद्वा कृपयाथवा मासिकं पिंडमश्नाति ततः शौरि पुरं व्रजेत् १० तत्र नाम्नातु राजावै जंगमं कालरूपधृक् तं दृष्ट्वा भयभीतश्च विश्रामं कुरुते मतिं ११ उदकं चान्न संयुक्तं भुक्ते तस्मिन्पुरे गतः त्रिपक्षं कंपवै दत्तं ततः पुरमतिक्रमेत् १२ [illegible] नगरे रम्ये प्रेतो याति दिवा निशं प्रेतो वनारि रौद्राणि दृष्ट्वा क्रंदति नित्यशः १३ भीषणैः [illegible] मानस्तु रुदते च पुनःपुनः मास द्वयावशानेन

षे ॥१२॥ श्रीभगवान् कहत हैं हे गरुड त्रिपक्ष को अन्नजल व्हाँ या प्राणी कूं प्राप्ति होत है फिर वा पुर कूं त्यागि के अगाडी कूं चलत है १२ हे गरुड फेरि वरेंद्र नगर कूं जात है एक रात दिन मे करि के चलत हैं महाभयानक वन है जाकूं देषके प्रेत कूं भय उपजै वार वार पुकारे हैं १३ तहां राक्षस कष्ट देत हैं वार वार नर कहता है दोय मास पीछे ता पुरुष कूं त्यागन करत है १४ ॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

अन्न जल वस्त्र बांधवदेसो प्रेत भोजन करैहैं ताठौर फिर यम के किंकरन के वस पडे है २५ तीसरे मास गंधर्व पुर मैं पहुंचे है
तीसरे मास के पिंड ता पुर विषै भोजन करत हैं २६ टीका चौथे मास नाग पुर को जात हैं वहां पर पथरन की वर्षा पा
पीन के ऊपर यम के दूत करत है ॥२७॥ चौथे मास को पिंड भोजन करिकै सुखी होत है २८ पांचवे मास क्रूरपुर को

भुक्त्वा चान्नं जलं वस्त्रं यद्दत्तं यहा बांधवैरिह ग्रह मान स्तदा स्वस्थ प्राप्यते यम किंकरैः २५ तृतीय मास
संप्राप्ते गंधर्व नगरे शुभे तृतीये मास कं पिंडं तत्र भुक्तं यगच्छति २६ तुर्ये नागा विधे प्रेतो मासि प्रा
प्नोति वै पुरं पाषाणा स्तत्र वर्षंति प्रेतस्यो परि दुःखिदा २७ तूर्य मासिकजं पिंडं भुक्त्वा तत्र सुखं भ
वेत २८ ततो पतिपुरं प्रेता क्रूर माद्रेतु पंचमे दत्तं तेनात था भुक्त्वा विनत्स स्तत्पुरे स्थितः २९ पुनः षाण्मा
सिकं क्रौंचे पंचभिः सार्द्ध मासिके तत्र दत्तेन पिंडेन भक्षयेद्या प्यापितं पुरे ३० मुहूर्तार्द्धं च विश्राम कंपमान
सुदुःखितः तत्पुरं तु परित्यज्य तर्जितो यम किंकरैः ३१॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥

जात है ताकू स्नेह करिकै बांधवदे सो तहां प्रेत भोजन करत है और परवस व्है गयो है २९ छठे मास कू क्रौंच पुर जात हैं ॥ और
एक मासी को पिंड साढे पांच मास में भरत हैं सो ता पुर विषै प्राप्त होत है ता कूं भोजन करत है ॥ ३० ॥ हे गरुड एक घडी वि
श्राम ता ठौर करै है ता पाछैं वा पुर कूं त्यागि कैं आगे को चले है ॥ ३१ ॥ १९

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com